हिन्दुस्तान
लखनऊ LIVE

युवा

प्रेरणा स्कूल के दो दिवसीय कॉन्सर्ट ' छू लें आसमां' का गुरुवार को समापन हुआ

सिटी

फैशन एण्ड लाइफ स्टाइल प्रदर्शनी का आगाज हुआ, लोगों ने की खरीदारी

आओ राजनीति करें

नाका गुरुद्वारे में सभी धर्मों के गुरुओं ने लोगों से मतदान करने की अपील की

शुक्रवार , 03 फरवरी 2017
www.livehindustan.com

### नई बर्फ ग्लेशियर में चिपकने के बजाय भाप बनकर हवा के साथ मैदानी इलाकों में पहुंच रही

# अप्रैल तक सता सकती है इस बार ठंड

लखनऊ। प्रमुख संवाददाता

इस बार अप्रैल तक लोगों को ठंड का सामना करना पड़ सकता है। इसका सबसे बड़ा कारण पहाड़ों पर पड़ रही बर्फ ग्लेशियर पर टिक नहीं पा रही है। वह उड़कर मैदानी इलाकों में पहुंच रही है। यही कारण है कि लोगों को अब तक ठंड का सामना करना पड़ रहा है।

**ग्लेशियर का बढ़ रहा तापमानः** यह दावा पर्यावरण वैज्ञानिक व स्कूल आफ साइंस मैनेजमेंट के महानिदेशक डा. भरतराज सिंह का है। उन्होंने बताया कि उत्तरी ध्रुव पर 110 लाख वर्ग किलोमीटर व दक्षिणी ध्रुव पर 140 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर बर्फ थी, जो लगातार घट रही है। उत्तरी ध्रुव में लगभग दो तिहाई बर्फ पिघल चुकी है, जबकि दक्षिणी ध्रुव के ग्लेशियर में बड़ी-बड़ी दरारें आ चुकी हैं। यही नहीं ग्लेशियर का तापमान में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। पहले ग्लेशियर का तापमान माइनस 80 डिग्री सेल्सेसियस होता था, जो अब बढ़कर माइनस 40 डिग्री सेल्सियस हो चुका है।

## ग्लेशियर पर चिपक नहीं रही नई बर्फ

प्रो. सिंह ने बताया कि ग्लेशियर के तापमान में वृद्धि के कारण नई बर्फ उस पर चिपक नहीं पा रही है। जो बर्फबारी हो रही है, उसका तापमान माइनस 60 डिग्री के आसपास होता है। जबकि ग्लेशियर का तापमान माइनस 40 डिग्री हो चुका है। ऐसे में नई बर्फ ग्लेशियर में चिपकने के बजाए वाष्पीकृत होकर हवा के साथ मैदानी इलाकों में पहुंच रही है। अब तक कोहरा पड़ने का कारण भी यही है। इसके साथ ही ग्लेशियर का तापमान बढ़ने से जमी बर्फ दलदल में तब्दील हो रही है और उसका फैलाव हो रहा है। वह भी वाष्पीकृत होकर हवा के साथ मैदानी इलाकों में पहुंच रही है। उन्होंने कहा कि यह कोई हिमयुग की शुरुआत नहीं है, बल्कि मानवीय गलतियों से पृथ्वी के वायुमंडल पर प्राकृतिक उथल-पुथल है।

## ये हैं मानवीय कारण

- पृथ्वी के अवयवों का दोहन।
- कोयले से संचालित विद्युत तापग्रह, अनियंत्रित औद्योगिकीकरण, आवागमन के वाहनों में अप्रत्याशित वृद्धि, जंगल के पेड़ों की कटान से वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी हो रही है।
- ग्रीन हाउस गैसों के अत्याधिक उत्सर्जन होना।
- विश्व के सभी देश ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम नहीं कर रहे इस वजह से स्थिति विकराल रूप लेती जा रही है।